अप्रैल–जून, 2025 वर्ष : 26 अंक : 2

हिन्दी जगत

विश्व हिन्दी न्यास का त्रैमासिक प्रकाशन

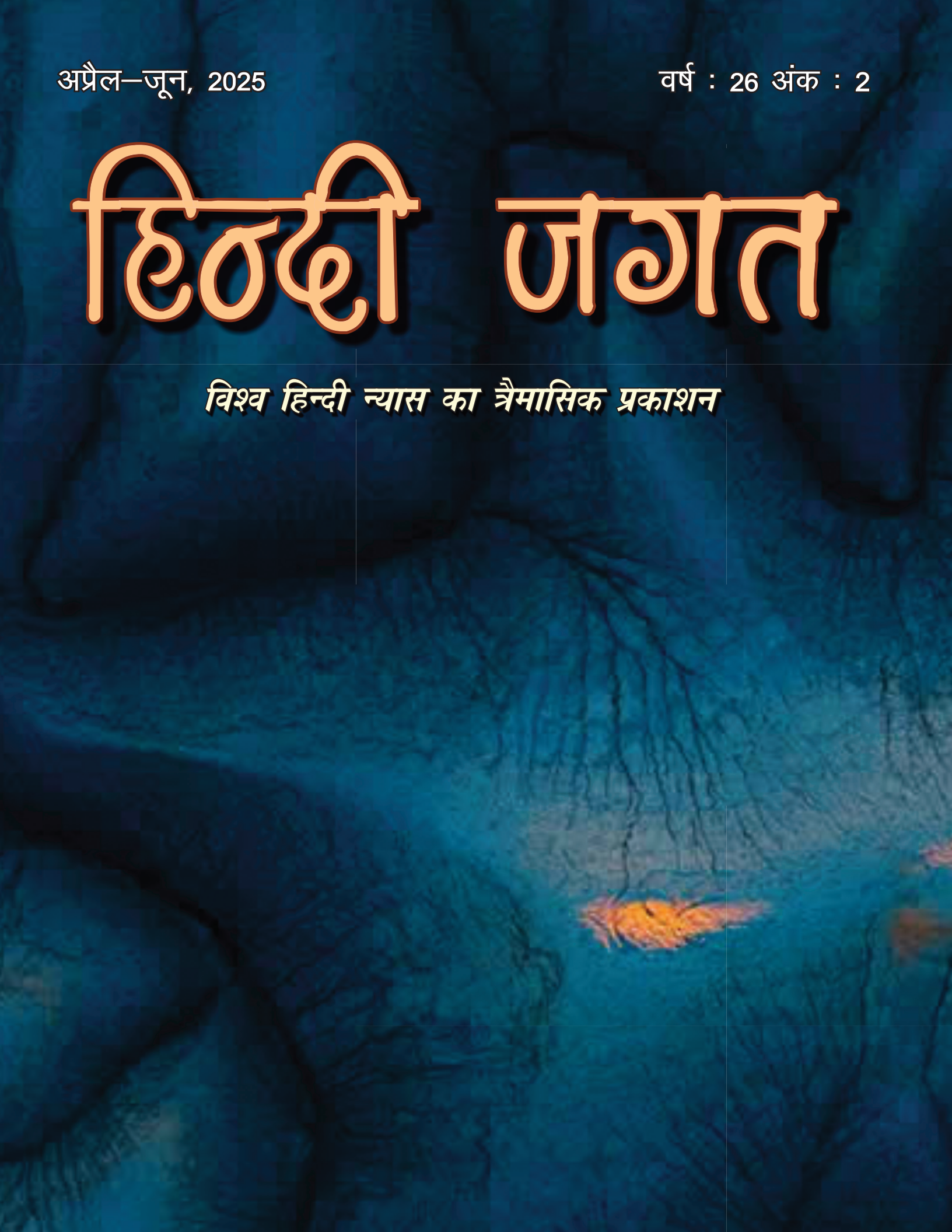

विश्व हिन्दी न्यास
WORLD HINDI FOUNDATION, INC.

A Tax-Exempt Charitable & Educational Foundation (ID 31-1679275)

Website : www.worldhindifoundation.org

Board of Directors

Executive Director

Dr. Anchala Sobrin
20 Presidential Way, Hopewell Junction, NY 12533
Tel: (845) 226 2542 । Email: hindinyas@gmail.com

Secretary

Mrs. Padmini Prasad
1282 Royal Pointe Lane, Ormond Beach, FL 32174
Tel: (845) 764 1058 । Email: prasad.padmini@gmail.com

Treasurer

Mr. Pradeep Agarwal
25, Oak Tavern Circle, Branchburg NJ 08876
Tel: (646) 472 6320 । Email: pnagarwal@gmail.com

Directors

Dr. Surendra Nath Pandey, GA (706) 610 1601
pandeysn@yahoo.com
Mrs. Seema Khurana, NY (845) 227 8605
seemakhurana1223@gmail.com
Mrs. Sharmishtha Dutta Banerjee NY (845) 764 9014
sduttabanerjee@gmail.com
Mr. Anil Agarwal, NY (718) 271 3129
manishi.anil@gmail.com
Prof. Suresh Rituparna, India (+91) 09810453245
rituparna.suresh@gmail.com
Dr. Shyam Narayan Shukla, CA (510)770-1218
shuklas@comcast.net
Dr. Ila Prasad, TX (832) 446-3677
ila_prasad1@yahoo.com

Chapter Directors

Buffalo: Mrs. Meena Rustgi (716) 632 5768
rustgime@roadrunner.com
California: Mrs. Nirmala Shukla (510) 770 1218
nirmalashukla@comcast.net
Chicago: Mr. Kamal Gupta (847) 612 4244
citkam@gmail.com
New Jersey: Mr. Sharad Agarwal (732) 283 0566
sharad@sntravel.net
New York: Mr. Man Mohan Maheshwari (212) 678 9011
m_wari@yahoo.com

Web Master

Mr. Saugata Banerjee
Email : ronbans@gmail.com

Editor Hindi Jagat & International Co-ordinator

Prof. Suresh Rituparna
221 Prabhavi Apartments, Plot No. 29B,
Sector 10, Dwarka, New Delhi 110075
Tel: 91 11 4558 4374, Mob.: 91 98104 53245
Email: rituparna.suresh@gmail.com

विश्व हिन्दी न्यास की परिकल्पना (Vision)

1. एक ऐसा विश्व जहाँ हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक-भाषा के रूप में विकसित हो।
2. एक ऐसी कार्य साधक भाषा बनाने का प्रयास जिसका प्रयोग सरकारी एवं निजी संस्थानों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र संघ में भी हो सके।

विश्व हिन्दी न्यास का उद्देश्य (Mission)

1. हिन्दी भाषा के प्रति वैश्विक जागृति लाने का प्रयास
2. ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में इसके प्रयोग का विस्तार
3. हिन्दी भाषी समुदायों के बीच संस्कृति जन्य ज्ञान पर आधारित मूल्य बोध एवं शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार

विश्व हिन्दी न्यास का लक्ष्य (Goals)

1. न्यास का प्रयास रहेगा कि वह ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं को अपना समर्थन और प्रोत्साहन दे जो हिन्दी भाषा के शिक्षण एवं प्रयोग के क्षेत्र में जागृति फैलाने के कार्य से जुड़ी हुई हैं।
2. दक्षिण एशियाई विद्वानों, लेखकों, कलाकारों एवं विशेषज्ञों के सहयोग से विशिष्ट परियोजनाओं का सूत्रपात करना।
3. एक ऐसे अन्तर्जालिक आभासी मंच का निर्माण करना जिस पर 'ऑनलाइन सेटिंग' के माध्यम से भारतीय सामुदायिक केन्द्रों एवं शिक्षण संस्थाओं तक हिन्दी-शिक्षण-कार्यक्रमों को पहुँचाया जा सके।

न्यास की सदस्यता

विश्व हिन्दी न्यास के उद्देश्य और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें अनेक सक्रिय सदस्यों की आवश्यकता है। हमारा प्रयास है कि जो भी व्यक्ति न्यास के उद्देश्य, लक्ष्य एवं प्रेरक कार्यों में रूचि रखता है, न्यास का सदस्य बनने के लिए उसका हम सहर्ष स्वागत करते हैं। न्यास का सदस्य बनने के लिए तीन श्रेणियां हैं--

1.	आजीवन सदस्य	(सदस्यता राशि - $400 मात्र)
2.	वार्षिक पारवारिक सदस्य	(सदस्यता राशि - $ 40 मात्र)
3.	व्यक्ति सदस्य	(सदस्यता राशि - $25 मात्र)
4.	छात्र सदस्य	(सदस्यता राशि - $ 10 मात्र)

अनुदानदाता सदस्यों के लिए पांच श्रेणियां हैं:-

1.	हिन्दी रत्न	- $20,000 अथवा इससे अधिक
2.	हिन्दी संरक्षक	- $10,000 अथवा इससे अधिक
3.	हिन्दी हितकारी	- $5,000 अथवा इससे अधिक
4.	हिन्दी मित्र	- $3,500 अथवा इससे अधिक
5.	हिन्दी शुभचिन्तक	- $2500 अथवा इससे अधिक

आप किसी भी श्रेणी का चुनाव कर सकते हैं और अनुदान का चैक कोषाध्यक्ष (Treasurer) श्री प्रदीप अग्रवाल को निम्न- लिखित पते पर भेजने की कृपा करें।

25, Oak Tavern Circle, Branchburg, NJ 08876 USA
Tel: (646) 472-6320 Email: pnagarwal@gmail.com

न्यास की वेबसाइट पर जाकर सदस्यता फॉर्म भरकर भेज दीजिए।

हम आपसे सम्पर्क करेंगे।

हिन्दी जगत

ISSN 1543-8651 (USA)

अप्रैल-जून 2025 ● वर्ष : 26 अंक : 2

सम्पादक मंडल

प्रबंध सम्पादक
डॉ. अंचला सोब्रिन
àßmail : hindinyas@gmail.com, Tel : +1(845) 226-2542

सम्पादक
प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण
àßmail: rituparna.suresh@gmail.com, Tel : 91-9810453245

●

सह-सम्पादक
इला प्रसाद
àßmail : ila_prasad1@yahoo.com, Tel : +1(832) 446-3677

निवेदन : कृपया प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएँ सम्पादक मंडल के पास भेजें। पत्रिका में व्यक्त विचार स्वतन्त्र रूप से लेखकों के हैं, न्यास का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा प्रकाशित रचनाओं के लिए हम किसी प्रकार का मानदेय देने में असमर्थ हैं।
इस अंक में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों के प्रति हम अत्यन्त आभारी हैं।

विश्व हिन्दी न्यास,
World Hindi Foundation
20 Presidential Way Hopewell Junction,
New York, 12533
के लिए
डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय-संयोजक द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

आपके पत्रों से		2
सम्पादकीय		3
कुछ ग़ज़लें	—आलोक श्रीवास्तव	4
तीसरी क़सम : स्मृतियों की अनुगूँज	—परिचय दास	5
लौट आओ	—त्रिलोक महावर	7
प्रेम की ज्यामिति (कहानी)	डॉ. सी.वी. आनंद बोस अनुवाद—श्वेता भट्ट	7
भाषा जब खत्म होती है (कविता)	—नितिन गुप्त	8
दो कविताएँ	अनुपमा तिवाड़ी	8
साहित्यिक बाजार में नया कारोबार	—अनन्त विजय	9
आडंबर (लघुकथा)	—प्रिया देवांगन 'प्रियू'	10
माँ का बैंक एकाउंट (कहानी)	—कैथरीन फ़ॉबेस अनुवाद—सत्येन्द्र शरत	11
चोरी (कहानी)	—नीलेश रघुवंशी	13
सात कविताएँ	—राकी गर्ग	14
उसका जाना (कहानी)	—डॉ. शैलजा सक्सेना	15
बाल्टिक सागर के किनारे (कविता)	—उपेंद्र कुमार	20
मोरे राम का भीजै मुकुटवा (निबंध)	—प्रभाशंकर उपाध्याय	21
दोहे	—योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'	22
वसुधा : एक स्त्री (कविता)	—पुष्पिता अवस्थी	22
गिरगिट (कहानी)	—एंटन चेखव अनुवाद—सुशांत सुप्रिय	23
मन का माली	—ललित मंगोत्रा	24
पाँच कविताएँ	—ज्योति कृष्ण वर्मा	25
किस काम के (कविता)	नीरज नीर	25
कोई भी नई भाषा सीख, हम हिंदी के लिए एक नई खिड़की खोलते हैं	—बाल मुकुंद	26
पश्चिम से पुनः पूर्व की ओर (आलेख)	—शकुंतला बहादुर	28
क्षणिकाएँ	—शशि पाधा	29
संस्कार (कहानी)	—नीलम जैन	30
अचार की कामना (कविता)	—जसवीर त्यागी	33
प्रार्थनाओं का पानी (डायरी)	—जयप्रकाश मानस	34
एक ग़ज़ल	—अशोक व्यास	37
चार कविताएँ	—आकांक्षा यादव	38
इरा, सब सुनेंगे तुम बोलो (कहानी)	— नीरजा हेमेन्द्र	39
पगडंडिया (कविता)	—ममता प्रवीण	42
ज़हर के सौदागर (व्यंग्य)	—धर्मपाल महेंद्र जैन	43
ज़िंदगी (कविता)	—डॉ. ऋतु शर्मा	44
चार कविताएँ	—राजेंद्र उपाध्याय	45
संवाद की निराशा	—अनुपमा नौडियाल	46
प्रेम : कुछ आयाम (कविता)	—इला प्रसाद	47
बारह कविताएँ : संदर्भ-मृत्यु	—अरुण देव	48

आपके पत्रों से

आपके द्वारा प्रेषित 'जनवरी-मार्च' के हिन्दी जगत को पढ़कर हमारा मनोजगत खिल उठा, एतदर्थ हार्दिक आभार!! इस बार संयोग से पत्रिका हाथ लगी तभी उसे लेकर दिनभर कुछ काम के सिलसिले में गाड़ी में समय मिल गया तो सबसे पहले आपके संपादकीय ने ध्यान आकृष्ट किया। हृदय से निकली सीधी-सच्ची बातें। ललित मंगोत्रा की 'एक किताब लिखूँ' और 'ख़ाली जगहें' अलग-अलग रंग की इन दोनों कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। ख़ाली जगहें ने पिछले मोड़ों पर छूटे कई साथियों की याद ताज़ा कर दी। फिर 'भारत की विदेश नीति और हिन्दी' को पढ़कर थोड़ा ज्ञानार्जन किया। अदित कंसल की सूत्रात्मक टिप्पणी नुमा कविताओं ने न केवल मेरा, मेरे युवा पौत्र को भी प्रभावित किया और मन मोह लिया। इसके अलावा कहानी-'पूस की एक रात', व्यंग्य- 'ओ माइ गॉड' अच्छा लगा। अंत में जसवीर त्यागी की 'बेटियाँ जब विदा होती हैं' और 'स्नेह का संगीत' दोनों मर्मस्पर्शी कविताएँ उद्धरणीय हैं, मन को सुकून देने वाली हैं। इन सारी रचनाओं के चयनकर्ता का हृदय से पुन: आभार! आशा है आप स्वस्थ होंगे। बातें होंगी, इसी तरह फिर कभी-

— डॉ. तारा दूगड़

कोलकाता

'हिन्दी जगत' एक अनूठी पत्रिका है। अक्टूबर-दिसम्बर, 2024 का अंक प्राप्त हुआ। लता कादम्बरी का यात्रा-वृत्तान्त 'राम नगरिया बुला रही है' पढ़कर अपनी मातृभूमि की याद ताजा हो गई। चूँकि उस समय राम मंदिर का निर्माण नहीं हुआ था। लेकिन वो सरयू नदी का किनारा, हनुमान गढ़ी आदि सभी जगह जब मन करता था, चले जाते थे। अब कभी-कभी जाना होता है, पर मन बार-बार जाने को करता। इस लेख को पढ़ते ऐसा लगा, कि अभी वहीं पहुँच गईं हूँ।

शीला झुनझुनवाला का संस्मरण 'यादों के गलियारे से : काशी', प्रिया देवांगन 'प्रियू' की लघुकथा 'इन्तजार' आदि सभी लेख, कविता आदि अन्य सामग्री भी पठनीय हैं।

ऐसी ज्ञानवर्धक और रोचक पत्रिका उपलब्ध कराने के लिए आपको बधाई और पुन: धन्यवाद।

— अदिति भाटिया

कालकाजी, नई दिल्ली

''हिन्दी जगत'' पत्रिका का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने हमें इतने सुंदर, संवेदनशील और विचारोत्तेजक भावों से सजी रचनाएँ पढ़ने का अवसर प्रदान किया। इस प्रकार के भावपूर्ण साहित्य से हमें न केवल भाषा की सुंदरता का अनुभव होता है, बल्कि जीवन और मानवीय संवेदनाओं की गहराई को समझने का अवसर भी मिलता है। पत्रिका के माध्यम से किसी भी क्षेत्र के प्रख्यात व्यक्तियों के बारे में अनसुने किस्से पढ़ने को मिल जाते हैं।

आपका, रोचक व मनोरंजक सामग्री पाठकों को सुलभ कराने का, यह प्रयास सराहनीय, प्रेरणादायी और अभिनंदनीय है। धन्यवाद।

तान्या अग्रवाल

विवेक विहार, दिल्ली-95

नीलम जैन द्वारा लिखित ''अंतिम यात्रा'' एक भावनात्मक और विचारोत्तेजक कहानी है, जो प्रवासी जीवन, अकेलापन, समाज से कटाव और मानवीय संवेदनाओं को गहराई से छूती है।

''अंतिम यात्रा'' केवल एक जीवन के अंत की कथा नहीं, बल्कि जीवन की उस सच्चाई की याद दिलाती है, जिसे अक्सर हम नजरअंदाज़ कर देते हैं। यह कहानी पाठकों को भीतर तक झकझोर देती है और संवेदनाओं से भर देती है।

वहीं साथ में विनीता तिवारी जी द्वारा लिखित कविता ''अंतिम पड़ाव'' में लेखिका ने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचने वाले व्यक्ति की मन:स्थिति को बेहद संवेदनशीलता से व्यक्त किया है। वे दो प्रश्नों को केन्द्र में रखती हैं : 1.जीवन का क्या अर्थ है?, 2.मृत्यु के बाद क्या होता है?

लेख में बताया गया है कि जीवन का असली मूल्य आत्मज्ञान, सच्चाई और परोपकार में है। अंत में, मृत्यु केवल शरीर की समाप्ति है, आत्मा अजर-अमर है। यह लेख पाठक को आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

'हिन्दी जगत' जनवरी-मार्च 2025 के अंक भेजने के लिए बहुत आभार व्यक्त करती हूँ जिसमें मुझे इतने सुंदर लेख पढ़ने का अवसर मिला।

— सुधा गुप्ता

जनकपुरी, नई दिल्ली

''हिंदी जगत'' जनवरी-मार्च 2025 पत्रिका का अंक वास्तव में ज्ञान, संवेदना और राष्ट्रभक्ति की त्रिवेणी है। इसमें प्रकाशित लेख ''के.एल.सहगल'' भारतीय फिल्म संगीत के पहले महानायक की भावनात्मक यात्रा को अत्यंत संजीदगी से प्रस्तुत करता है, वहीं ''भारत की विदेश नीति और हिंदी'' शीर्षक लेख भारत की सांस्कृतिक शाक्ति और हिंदी के वैश्विक प्रसार की सशक्त तस्वीर पेश करता है। यह लेख दर्शाता है कि किस प्रकार हिंदी केवल एक भाषा नहीं बल्कि भारत की पहचान और विदेश नीति की सॉफ्ट पावर बन चुकी है। 2010 से लेकर 2023 तक के अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी के उपयोग और उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा को विस्तारपूर्वक बताया गया है।

इस अंक की विशेष बात इसका सौंदर्यपूर्ण आवरण पृष्ठ भी है, जो भारतीय रंग-संवेदना और कला की गहराई को दर्शाता है। ''हिंदी जगत'' न केवल उच्च कोटि की सामग्री प्रकाशित करता है, बल्कि यह राष्ट्र, संस्कृति और भाषा के बीच एक सेतु की भूमिका निभाता है। यह पत्रिका हिन्दी प्रेमियों के लिए नि:संदेह एक प्रेरणास्रोत है।

— शुभी त्रिपाठी

कृष्णकुंज कालोनी, दिल्ली

सम्पादकीय

कैसा अजब समय आया है कि लोग अपनी पहचान के लिए लड़ रहे हैं। उनके पास सब कुछ है लेकिन समाज में कोई उन्हें पहचानता नहीं है। हजारों करोड़ के मालिक हैं, बड़े-बड़े आलीशान बँगलों में रहते हैं, एक से एक महँगी गाड़ियों में चलते हैं। उन्हीं के समकक्ष कुछ गिने-चुने परिवारों के अतिरिक्त उन्हें पहचानने वाला कोई नहीं है। उनके फोटो, अखबारों में, बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं में, टी.वी. के कार्यक्रमों में चमकते हैं लेकिन यह उनकी ऊपरी पहचान है। ऐसी पहचान जो सिर्फ चेहरे से जुड़ी है, समाज को उनकी आन्तरिक प्रतिभा का कुछ भी पता नहीं होता। उनके मनों में छिपी छोटी-छोटी अभिलाषाओं की बलि चढ़ती रहती है, यह सोचकर कि लोग क्या कहेंगे, वे किसी प्रसिद्ध चाट-कार्नर पर जाकर चाट या गोलगप्पे नहीं खा सकते। किसी मनोरम जगह पर जाकर अपने बचपन के उन मित्रों के साथ कहकहे नहीं लगा सकते जिनके साथ वे पढ़े थे, कॉलेज में मटरगस्ती की थी। चूँकि वे अब रुपये पैसे वाले समृद्ध बड़े आदमी हो गए हैं तो वे 'लगोटिया यार' भी धीरे-धीरे दूर होते जाते हैं और इसी तरह व्यक्ति भले दुनियारभर में पहचाना जाए लेकिन उसके अन्दर एक आत्मीयता विहीन वीराना फैलता जाना है।

इसके ठीक विपरीत एक दूसरा वर्ग भी है जो अपनी छोटी-छोटी दुकानों को वैश्विक स्तर की बताकर प्रसिद्धि प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है। उदाहरण के लिए न जाने ऐसे कितने लेखक हैं, कवि-कवयित्रियाँ हैं, कथाकार हैं जो प्रकाशकों से 100-200 या 300 पुस्तकें छपवा लेते हैं और फिर वे राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के लेखक हो जाते हैं।

रोज-रोज फेसबुक पर अपने बारे में कुछ-न-कुछ लिखते रहते हैं और लाइक-डिसलाइक की फ्लैश लाइटों में चमकते रहते हैं। उनके आत्म-मुग्ध चेहरों से जो नूर टपकता है, उसके क्या कहने। प्रवासी साहित्य के नाम पर भी ऐसा ही गोरख-धन्धा चल रहा है। कल तक भारत में रहने वाला लेखक जब किन्ही पारिवारिक कारणों से विदेश में जाकर रहने लगता है तो वह भी अपने को प्रवासी साहित्यकार घोषित कर देता है। जबकि उसकी रचनाओं में भारत की ही यादें एक नॉस्टेल्जिया की तरह समाहित होती हैं।

अब तो कुछ संस्थाओं ने भी साहित्यकार बनाने का व्यापार शुरू कर दिया है। इसी अंक में हमने दैनिक जागरण के एसोसियेट एडीटर श्री अनंत विजय का एक लेख सम्मिलित किया है, '' साहित्यिक बाजार में नया कारोबार '' जो उपरोक्त विषय को अत्यन्त रोचक और विचारणीय बना देता है। लगता है साहित्य लेखन का प्रशिक्षण भी प्लंबिंग, इलैक्ट्रिशियन या कार मैकेनिक जैसा तकनीकी काम है जिसे किसी भी वर्कशॉप में आसानी से सीखा जा सकता है। यह सचमुच विचारणीय है कि क्या कविता-कहानी प्रशिक्षण के बलबूते पर लिखी जा सकती हैं? जब तक व्यक्ति में लेखकीय प्रतिभा बीजरूप में विद्यमान न होगी वह किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण के बलबूते पर श्रेष्ठ साहित्य सृजन कैसे कर पाएगा?

इसी संदर्भ में 'हिन्दी जगत' के प्रस्तुत अंक में हम एक ऐसी कहानी प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें एक प्रतिष्ठित लेखिका का मार्गदर्शन पाकर, एक लड़की अच्छी कहानी कैसे लिखी जा सकती है सूत्र का—पा जाती है। यह तभी संभव हुआ जब उस प्रतिष्ठित लेखिका ने उस नवोदित लेखिका में लेखन के प्रति ललक देखी, उसमें कथा कहने की प्रतिभा भी थी लेकिन अच्छी रचना कैसे बनती है, यह बात उसे नहीं मालूम थी। और जब वह इस गुरु मंत्र को पा जाती है तो धीरे-धीरे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने लगती है। प्रतिभा को यदि कोई दिशा दे सके तो बात बन जाती है।

उर्दू शायरी में तो उस्ताद की शागिर्दी के बिना शायरी करना अत्यन्त मुश्किल बात रही है। इस्लाह बेहद जरूरी बताई गयी है। उस्ताद के द्वारा शब्दों के मामूली हेर फेर से ही चमत्कार हो जाता है। यह सब कड़े अभ्यास से ही संभव हो पाता है। खड़ी बोली कविता के आरम्भिक दिनों में यह काम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से बखूबी किया था।

यहाँ मुझे अपनी कविताई के आरम्भिक दिनों की एक बात याद आ रही है। मैं तब एम.ए. में पढ़ता था और प्रसिद्ध कवि डॉ. रामदरश मिश्र हमें पढ़ाते थे। उन दिनों मैंने एक कविता लिखी थी 'मौन' जो कोई दो-ढाई पृष्ठ में फैली हुई थी। एक दिन मैंने अनायास ही डॉ. मिश्र जी से निवेदन किया कि वे मेरी इस कविता को देखने की कृपा करें तथा बताएँ की कुछ बात बन रही है या नहीं। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा—अच्छा, इसे मुझे दे दो, कल बताऊँगा। अगले दिन उन्होंने मुझे कविता लौटाते हुए कहा—कविता का भाव बहुत सुन्दर है लेकिन इसकी लम्बाई अनाश्यक है। उन्होंने कविता के मूल भाव को व्यक्त करने वाली पंक्तियों को छोड़कर बाकी सभी पंक्तियाँ निकाल देने की बात कही और बताया—बाकी की पंक्तियाँ भाव की व्याख्या कर रही हैं। कविता 'स्टेटमैंट' नहीं है। भाव के ऊपर चढ़ी हुई शब्दों की अतिरिक्त चर्बी को हटा देना चाहिए। उनका यह सबक मैं कभी नहीं भूला। कम शब्दों में अपने भाव को पाठक तक पहुँचा देना ही कवि कर्म का उद्देश्य होना चाहिए।

वस्तुत: 'हिन्दी जगत' में हम निरन्तर नवोदित लेखकों की रचनाओं को स्थान देने का प्रयास करते रहते हैं। आगे भी यह प्रयास जारी रहेगा। आपके सहयोग के आकांक्षी हैं।

कुछ ग़ज़लें

□ आलोक श्रीवास्तव

मेरे हाथ लग गया था, कोई नूर का ख़ज़ाना
अभी तक उसी से रौशन है मेरा ग़रीबख़ाना

मेरे होंट कह रहे हैं, उसे चूम कर सुलाना
मेरे दिल की है तमन्ना, उसे रात भर जगाना

किसी राह भी निकलना, तेरे बिन कहीं भी जाना
तुझे याद करते रहना, तेरा नाम गुनगुनाना

कभी आइने में चेहरा जो बदल सको तो आना
मुझे फिर से तुम परखना, मुझे फिर से आज़माना

ये सफ़र भी क्या सफ़र है, वही मुख्तसर फ़साना
कभी ख़ुद से दूर जाना, कभी खुद में डूब जाना

यही वक़्त की हक़ीक़त, यही वक़्त का फ़साना
कभी ज़िंदगी की आहट, कभी मौत का बहाना

मेरा फ़न समझ सकेगा, ज़रा देर से ज़माना
मैं ग़ज़ल का हूँ मुसाफ़िर, मेरी बात शायराना

मेरी जान मेरी ग़ज़लें कभी तुम भी गुनगुनाना
मैं चराग़ शाम का हूँ, मुझे सुब्ह तक जलाना

❖❖❖

तेरी तस्वीर को सीने से लगाए घूमे
गोया इक तीर को सीने से लगाए घूमे

तुझसे मिलने का नहीं आया कोई भी मौसम
हम इसी पीर को सीने से लगाए घूमे

हम तो इक घर की तमन्ना को लिए बैठे रहे
आप जागीर को सीने से लगाए घूमे

जो हमारी ही वफ़ाओं को क़लम करती रही
ऐसी शमशीर को सीने से लगाए घूमे

रूह में फैल गई ऐसे ग़ज़ल की खुशबू
ग़ालिब-ओ-मीर को सीने से लगाए घूम

❖❖❖

हमन हैं इश्क़ मस्ताना, हमन को होशियारी क्या
गुज़ारी होशियारी से, जवानी फिर गुज़ारी क्या?

धुँए की उम्र कितनी है, घुमड़ना और खो जाना
यही सच्चाई है प्यारे, हमारी क्या, तुम्हारी क्या?

उतर जाए है छाती में, जिगरवा काट डाले है
मुई तन्हाई ऐसी है, छुरी, बरछी, कटारी क्या?

हमन कबिरा की जूती हैं, उन्हीं के क़र्ज़-दारी हैं
चुकाए से जो चुक जाए, वो क़र्ज़ा क्या, उधारी क्या?

❖❖❖

इक हुनर है वो भी विरसे में मिला है
देख लीजे हाथ में सब कुछ लिखा है

हिचकियाँ साँसों को ज़ख़्मी कर रही हैं
यूँ मुझे फिर याद कोई कर रहा है

नींद की मासूम परियाँ चौंकती हैं
एक बूढ़ा ख़्वाब ऐसे खाँसता है

चाँद से नज़दीकियाँ बढ़ने लगी हैं
आदमी में फ़ासला था, फ़ासला है!

साँस की पगडंडियाँ भी खत्म समझो
अब यहाँ से सीधा-सच्चा रास्ता है

मैं बदलते वक़्त से डरता नहीं हूँ
कौन है जो मेरे अंदर काँपता है

❖❖❖

हमेशा ज़िंदगी की हर कमी को जीते रहते हैं
जिसे हम जी नहीं पाए, उसी को जीते रहते हैं

हमारे दुःख की बारिश को कोई दामन नहीं मिलता
हमारी आँख के बादल, नमी को जीते रहते हैं

हमें मालूम है इक दिन भरोसा टूट जाएगा
मगर फिर भी सराबों में नदी को जीते रहते हैं

हमारे साथ चलती है, तुम्हारे प्यार की खुशबू
लगाई थी जो तुमने, उस लगी को जीते रहते हैं

किसी के साथ हैं रस्में, किसी के साथ हैं क़समें
किसी के साथ जीना है, किसी को जीते रहते हैं

चहकते-घर, महकते-खेत और वो गाँव की गलियाँ
जिन्हें हम छोड़ आए, उन सभी को जीते रहते हैं

ख़ुदा के नाम-लेवा हम भी हैं, तुम भी हो और वो भी
मगर-अफ़सोस! सब अपनी खुदी को जीते रहते हैं

❖❖❖

तुम्हारे पास आते हैं तो साँसें भीग जाती हैं
मुहब्बत इतनी मिलती है कि आँखें भीग जाती हैं

तबस्सुम इत्र जैसा है, हँसी बरसात जैसी है
वो जब भी बात करती है तो बातें भीग जाती हैं

तुम्हारी याद से दिल में उजाला होने लगता है
तुम्हें जब गुनगुनाता हूँ तो रातें भीग जाती हैं

ज़मीं की गोद भरती है तो कुदरत भी चहकती है
नए पत्तों की आमद से ही शाख़ें भीग जाती हैं

तेरे एहसास की खुशबू हमेशा ताज़ा रहती है
तेरी रहमत की बारिश से मुरादें भीग जाती हैं

❖❖❖

वो मानता ही नहीं हमसफ़र, तो क्या कीजे
हर इक दुआ है अगर बे-असर, तो क्या कीजे

नज़र की राह में यूँ तो कई नज़ारे हैं
तुम्हीं पे जा के जो ठहरे नज़र, तो क्या कीजे

हज़ार बार कहा है कि प्यार है तुमसे
जो तुम पे होता नहीं कुछ असर, तो क्या कीजे

हमारे पास भी पलकें तो हैं, मगर आँसू-
भटक रहे हैं अगर दर-ब-दर, तो क्या कीजे

लुटे तो हम भी कई बार आपकी ख़ातिर
नहीं है आपको इसकी ख़बर, तो क्या कीजे

❖❖❖

बात करो तो लफ्ज़ों से भी खुशबू आती है
लगता है उस लड़की को भी उर्दू आती है

तन्हाई में दिल से अक्सर ख़ुशबू आती है
याद हमें अम्मा आती हैं, या तू आती है

देख के उसको ख़ुद अपना भी होश नहीं रहता
आँखों में लेकर वो ऐसा जादू आती है

अपनों से दूरी के मौसम ज़ालिम होते हैं
यूँ आती है पुरवा भी जैसे लू आती है!

जब भी माँ का ध्यान आता है, मेरी पेशानी-
पल-भर में ही उसके चरणों को छू आती है

हम ने भी तो दिल जीते हैं मीठे लफ्ज़ों से
हम कायस्थों को भी थोड़ी उर्दू आती हैं

□

फणीश्वर नाथ रेणु जयंती के अवसर पर

तीसरी क़सम : स्मृतियों की अनुगूँज

□ परिचय दास

हीरामन ने अपनी तीसरी कसम खा ली, पर क्या प्रेम इस तरह की कसमों से बाँधा जा सकता है? क्या मन की गहराइयों में उभरने वाली वह कोमल अनुभूति किसी संकल्प से विलुप्त हो सकती है? नहीं, नदी की धारा की तरह है प्रेम, जो मार्ग खोज ही लेता है, चाहे कितने ही बाँध उसके सामने क्यों न खड़े कर दिए जाएँ। हीरामन ने कसम तो खा ली, लेकिन क्या उसकी आत्मा अब भी हीराबाई के स्वर से बंधी नहीं है?

चाँदनी रात में बैलगाड़ी की धीमी-धीमी चाल। पहिए के घूमने से उठती धूल में घुली किसी पुराने गीत की अनुगूँज। कहीं दूर, मेले के किसी उजास में, एक सुर सिहरता है—हीरामन की बैलगाड़ी बढ़ती जाती है, उसकी आँखों में एक सपना काँपता है। वह सपना, जो कभी पूर्ण नहीं होता, वह प्रेम, जो कभी मुखर नहीं होता।

हीराबाई के पाँवों में बँधी पायल की हल्की झंकार जैसे किसी धुंधले जलाशय में काँपती चाँदनी। उसकी आँखों में हँसी भी है, उदासी भी। वह जानती है कि यह यात्रा क्षणिक है, यह साथ किसी पड़ाव का मेहमान। पर मन! मन को तो बस लहरों पर बहना आता है, वह दिशा नहीं देखता। वह गंध की ओर बढ़ता है, स्वर की ओर खिंचता है, किसी अज्ञात संगीत में घुल जाता है।

हीरामन के भीतर कोई गीत जागता है, कोई कसक, कोई मधुर यातना। वह प्रेम को जिस रूप में जानता है, वह अलिखित है, अनकहा है—वह प्रेम आकाश में उड़ते बादलों की छाया-सा है, जो धरती पर गिरती है, पर किसी के हाथ नहीं आती।

फिर, कहीं एक धुन बजती है—

''सजनवा बैरी हो गए हमार।''

हीरामन ठिठक जाता है। उसके भीतर कोई टूटता है, कोई कसक उठती है, कोई प्रतिज्ञा जन्म लेती है। वह अपने जीवन की तीसरी कसम खा लेता है—अब कभी किसी नौटंकीवाली को अपनी बैलगाड़ी पर नहीं बिठाएगा। यह कसम नहीं, यह आत्मा का विलाप है।

हीरामन के बैलों की चाल अब पहले जैसी नहीं रही। रात की नमी में उसकी आँखें भीगी हैं। हीराबाई कहीं दूर, किसी मेले में चली गई है, और उसके गले में बँधी घंटियाँ किसी और नगर में झंकारें भर रही हैं।

पर क्या प्रेम कभी पूरा होता है? क्या कोई गीत कभी संपूर्ण गाया जाता है? शायद नहीं।

—फणीश्वरनाथ रेणु ('तीसरी कसम' कहानी का अन्तिम अंश)

प्रेम, जो बैलगाड़ी के पहियों की धूल में लिखा गया हो, उसे समय की आँधी उड़ा ले जाती है। लेकिन कुछ स्मृतियाँ—वे कभी नहीं मिटतीं। वे किसी पुराने गीत की तरह हृदय में बसेरा कर लेती हैं। वे ठहर जाती हैं, गूँज बनकर।

हीरामन अब भी बैलगाड़ी हाँकता है। पर उसकी आँखों में अब भी वही चाँदनी है, वही सुर, वही कसम—वही प्रेम, जो कभी कहा नहीं गया, पर जो सदा वहीं रहेगा—स्मृति की किसी गहराई में, किसी अधूरे गीत की तरह।

रात का सन्नाटा, बैलगाड़ी की मंथर गति और दूर कहीं बँसवारी में सोए पंछियों का हल्का कुनमुनाना—हीरामन की आँखों में गहरी नमी है, और मन किसी पुराने गीत की धुन में डूबा हुआ। बैलों की झुनझुनी बजती जाती है, और उसके भीतर कोई तान टूटती जाती है।

यादों की गलियाँ अजीब होती हैं। वे कभी सीधी नहीं चलतीं—कभी बचपन की कोई स्मृति सामने आकर खड़ी हो जाती है, कभी किसी पुराने मेले की तस्वीर आँखों के सामने घूम जाती है। हीरामन की आँखें अब भी उस रात की रोशनी में चमकते चेहरे को देख रही हैं—हीराबाई के चेहरे पर हल्की उदासी थी, पर उसमें एक अद्भुत तेज था, जैसे किसी आरती की लौ, जो बुझने से पहले सबसे अधिक चमक उठती हो।

अब गाँव का रास्ता दिखने लगा है। सुदूर मंदिर से घँटी की हल्की आवाज़ आ रही है। हीरामन के मन में सवाल उठता है—क्या हीराबाई उसे याद कर रही होगी? क्या उसने भी उसके लिए कोई कसम खाई होगी? पर हीरामन को जवाब नहीं मिलता, न मिलता है, न कभी मिलेगा। कुछ सवाल हवा में तैरते रहते हैं, जैसे अधूरे गीत, जो गले तक आते हैं, लेकिन स्वर नहीं बन पाते।

रात धीरे-धीरे बीत रही है। गाँव के किनारे की बावड़ी से मेंढकों की आवाज़ें आ रही हैं। हल्की ठंडी हवा बह रही है, लेकिन हीरामन को भीतर से कोई बेचैनी घेर रही है। वह जानता है कि सुबह सब कुछ सामान्य हो जाएगा। गाँव के लोग वैसे ही अपने कामों में लग जाएँगे, चौपाल पर वही बातें होंगी, बैलों की घंटियाँ वैसे ही बजेंगी। लेकिन वह, जो भीतर से बदल चुका है, क्या वह फिर से पुराना हीरामन बन पाएगा? क्या कोई आदमी एक ही जीवन में दो बार पहले जैसा हो सकता है? शायद नहीं।

कुछ यात्राएँ हमें वैसा नहीं रहने देतीं, जैसा हम पहले थे। वे भीतर कुछ ऐसा छोड़ जाती हैं, जो कभी पूरी तरह मिटता नहीं। हीरामन अब भी बैलगाड़ी हाँकेगा, यात्रियों को बिठाएगा, गाँव के रास्तों पर घूमेगा, लेकिन अब उसकी आँखों में एक नया रंग

होगा—एक हल्का, फीका-सा नीलापन, जैसे नदी के गहरे पानी में झाँकने पर दिखता है।

और हीराबाई?

क्या जब कोई गीत गाएगा—''सजनवा बैरी हो गए हमार''—तो उसकी आँखों में भी वही नमी नहीं आएगी, जो हीरामन की आँखों में ठहरी है?

कुछ प्रेम कहे नहीं जाते, कुछ प्रेम पूरे नहीं होते। लेकिन कुछ प्रेम कभी समाप्त भी नहीं होते। वे किसी धुंधली शाम की तरह मन में बसे रहते हैं, किसी बैलगाड़ी की धीमी झुनझुनी की तरह, जो अनसुनी होकर भी सुनी जाती रहती है।

बैलगाड़ी अब भी चल रही है, पर अब उसकी चाल में वह उत्साह नहीं, वह बेफिक्री नहीं। पहले पहियों की चरमराहट में एक लय थी, जैसे कोई गीत चल रहा हो, पर अब उसमें एक विराम-सा है, जैसे कोई अधूरा सुर अटका रह गया हो। हीरामन की हथेलियाँ लगाम पर कस गई हैं, पर मन अब भी उस एक शाम की गिरफ्त में है, जब चाँदनी की हल्की रोशनी में हीराबाई का चेहरा जैसे किसी लोककथा की परी की तरह दमक रहा था।

हीरामन को याद आता है—कैसे वह पहली बार उसकी बैलगाड़ी पर बैठी थी... फिर उसकी हँसी, वह हँसी अब भी कहीं गूँजती है, किसी सूने खेत में बहती हवा की तरह, किसी सूखे पत्ते की खड़खड़ाहट की तरह।....

पर क्या हीराबाई भी उसे याद कर रही होगी? क्या वह भी किसी वीरान रात में सोच रही होगी कि हीरामन कहाँ होगा, किस बैल को हाँक रहा होगा, किसके साथ रास्ता बाँट रहा होगा? शायद नहीं। सोचता है हीरामन, हीराबाई अब किसी दूसरे गाँव के मेले में होगी! उसका प्रेम वैसा ही है, जैसा नदी का किनारे से प्रेम—जो बार-बार लहरों में बिखर जाता है, फिर भी समाप्त नहीं होता।

गाँव की चौहद्दी पर पहुँचा ही था कि दूर मंदिर की घंटियाँ सुनाई दीं। उसकी आवाज़ में जाने कैसी उदासी घुली हुई थी, जैसे वह भी किसी प्रतीक्षा में हो। हीरामन के हाथ अनायास ही बैलों की लगाम कसने लगे—पर किसे रोक रहा था वह? समय को? स्मृति को? या उस कसम को, जो उसने अपने ही हृदय के विरुद्ध खाई थी?

अचानक हीरामन की आँखों के आगे एक दृश्य कौंधा—हीराबाई एक सजे-धजे मंच पर खड़ी है। दर्शकों की भीड़ उसके चारों ओर तालियाँ बजा रही है। कोई उस पर फूल बरसा रहा है। और वह? वह हँस रही है, वैसे ही जैसे उस दिन बैलगाड़ी में हँसी थी। पर उसकी आँखों में वही नमी है, वही अनकही उदासी, जो उसकी हँसी के पीछे छुपी रहती है।

हीराबाई वही स्त्री है, जिसे हीरामन ने अपने मन की सबसे कोमल जगह पर बसा लिया था! यह वही हीराबाई है, जिसे उसने अपनी दुनिया की सबसे निष्कलुष जगह पर रख दिया था!

रात गहराने लगी थी। हीरामन ने बैलों की रस्सी हल्के से झटका दी। गाड़ी आगे बढ़ गई। पहिए फिर घूमने लगे। धूल फिर उठने लगी। पर अब वह धूल एक नयी दिशा में उड़ रही थी।

हीरामन ने अपनी तीसरी कसम खा ली थी—पर क्या यह कसम वाकई कोई संकल्प थी, या बस एक लाचार मन का आत्मसमर्पण?

शायद यह प्रेम का सबसे बड़ा सत्य है—कुछ प्रेम केवल मन में रहते हैं, बिना किसी नाम, बिना किसी पहचान। वे सिर्फ़ स्मृति बनकर जीते हैं, किसी पुराने गीत की तरह, जो कभी पूरा नहीं होता, लेकिन जिसकी धुन हमेशा साथ चलती है।

हीरामन अब भी बैलगाड़ी हाँकेगा, यात्रियों को बिठाएगा, गाड़ियों के मेले में जाएगा। पर जब कभी दूर से कोई गाएगा—''सजनवा बैरी हो गए हमार''—तो उसके हाथ अनायास ही ढीले पड़ जाएँगे, उसकी आँखें कहीं दूर देखने लगेंगी, और उसके भीतर वह एक रात, वह एक हँसी, वह एक स्मृति फिर से जाग उठेगी—कभी न समाप्त होने वाली, कभी न भूलने वाली। ❐

प्रोफेसर, नव नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय,
नालंदा, बिहार

लौट आओ

❐ त्रिलोक महावर

लौट आओ
आँसुओं
वापस आँखों में
अब समंदर में भी
और जगह नहीं है
खारेपन के लिये

पहाड़ों ने भी
लौटा दी हैं
विकम्पित
प्रतिध्वनियाँ

ग्लेशियर
दरक रहे हैं

धुँधलके को चीरकर
झर रहीं हैं स्मृतियाँ
सूखे पात सी
दरख्तों से

इन्तजार को
इन्तजार है
इन्तजार का

लौट आओ
फिर न लौटने के लिए। ❐

मलयालम कहानी

प्रेम की ज्यामिति

▫ डॉ. सी.वी. आनंद बोस
अनुवाद ▫ श्वेता भट्ट

शेखरेत्तन ने दृढ़ता से कहा, ''यही सही चीज है। वाशिंगटन इरविंग ने जो कहा था, वह सच है—सर्वशक्तिमान डॉलर।''

''हमारे यहाँ भी ऐसा ही है। इसीलिए पुराने समय के लोग कहते थे, अगर पैसा किसी भी गंदे तरीके से कमाया जाता है, तो वह उस गंदगी को भी साफ कर देगा।''

''अब आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'' मैंने पूछा।

शेखरेत्तन ने अपने हाथ में लिया अखबार आगे बढ़ाया, जिसमें एक ऐसे बेटे की खबर थी, जिसने अपने माता-पिता को विश्वास दिलाया कि वह उन्हें तीर्थयात्रा के लिए गुरुवायुर ले जा रहा था, लेकिन उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ दिया।

इससे पहले उस चतुर व्यक्ति ने एक और काम किया। उसने चालाकी से अपनी माँ के हिस्से का घर और परिसर एक जमींदार को बेच दिया।

शेखरेत्तन आक्रोश की लहर को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे।

''क्या करें, समाज का यही हाल हो गया है, ''मैं उनसे सहमत था।

''उदाहरण के लिए, शिक्षण संस्थानों में भी, हम किसी छात्र को ज्ञान के लिए अध्ययन करते नहीं देखते हैं। यह सब पैसा कमाने के लिए होता है। एक समय छात्रों के बीच साहित्य और इतिहास जैसे विषयों की माँग थी। अब उन्हें कोई नहीं पढ़ना चाहता। हर कोई इंजीनियरिंग, चिकित्सा और आई.टी.चाहता है। सारा पैसा वहीं है, ''मैंने उन्हें एक समानांतर उत्तर दिया।

''वैल, ऐसा आज नहीं हो रहा है कि उपयोगिता के बिना ज्ञान अवांछित हो गया है। लोगों की रुचि सदैव साध्य में रही है, साधन में नहीं और आज अंतिम लक्ष्य पैसा है। बाकी सब भाड़ में जाए। आप विषयों पर बात करते हैं—मुझे बताइए, क्या ऐसे भी महान् लोग हैं, जो कवियों को अयोग्य मानते हैं? वे अभी भी व्याकुलता से काँप रहे थे।

''बिल्कुल सच है, शेखरेत्तन! औरंगजेब को संगीत से नफरत थी। एक बार, कुछ लोग सम्राट के सामने से एक ताबूत लेकर जा रहे थे। जब उनसे पूछा गया कि मृतक कौन था, तो उन्होंने कहा, संगीत। सम्राट की प्रतिक्रिया अजीब थी। ''संगीत मर गया है? फिर इसे गहराई में दफन कर दो,'' उसने कहा, ''जिस चीज का कोई उपयोग नहीं है, उसे फेंक दो।'' हमने अपनी संस्कृति, अपना संगीत, अपनी खान-पान की आदतें और अपने मूल्यों को एक-एक करके बाहर फेंक दिया है।''

''उनके साथ अपनी माँ को भी और फिर इस पाप से मुक्ति के लिए हम मातृदिवस मनाते हैं। वह रिपोर्टर, जिसने इस समाचार को कवर किया है, आज का इतिहासकार बन जाएगा,'' शेखरेत्तन ने रिपोर्ट की ओर इशारा किया।

''वैसे भी, लोगों का मानना है कि ज्यामिति रोमांस से बेहतर है। हमारे पास ऐतिहासिक सबूत हैं,'' उन्होंने सामान्य रूप से कहा, किसी विशेष व्यक्ति से नहीं।

हम समझ गए कि शेखरेत्तन विश्व साहित्य में कदम रख रहे थे।

लेकिन फिर, साहित्यिक कला, रोमांच और गणित को कौन जोड़ सकता था?

''तुमने ऑस्कर वाइल्ड की प्रेम कविता, 'द नाइटिंगेल एंड द रोज' नहीं पढ़ी है?'' उन्होंने पूछा, जैसे कि उस संदेह को संबोधित कर रहे हों।

''नहीं, शेखरेत्तन !''

''तो सुनो।''

शेखरेत्तन कहानी सुनाने लगे।

''एक छात्र था, जो रोमांस में डूबा हुआ था। वह अपने प्रोफेसर की बेटी को पसंद करता था, बल्कि उससे प्यार करता था।

''एक कार्यक्रम में वह मुख्य अतिथि के रूप में आने वाली थी और छात्र उसके साथ नृत्य करने के लिए उत्सुक था।

''तो वह उससे डांस के लिए पूछता है,'' जिस पर वह जवाब देती है, अगर तुम मुझे लाल गुलाब उपहार में दोगे, तो ही मैं तुम्हारे साथ डाँस करूँगी।''

''अब वह लाल गुलाब की तलाश में भटकने लगता है।''

''उसे एक भी गुलाब नहीं मिलता है, क्योंकि वह वास्तव में गुलाब खिलने का मौसम नहीं था।''

''एक बुलबुल उसे रोते हुए देखती है और सोचती है कि क्या मैं इस बेचारे की मदद कर सकती हूँ? बुलबुल उस लड़के की भावना से अभिभूत हो जाती है और उसकी आँखों में शुद्ध प्रेम, उसके आँसुओं में ईमानदारी देखती है और खुद ही एक लाल गुलाब ढूँढ़ने का फैसला करती है।''

''वह उड़कर गुलाब के पौधे के पास जाती है और उससे पूछती है, क्या तुम मुझे लाल गुलाब दोगे?''

पौधा कहता है, ''मेरी शाखाओं में बहुत सारे फूल हैं, लेकिन सभी सफेद गुलाब हैं, लाल नहीं।''

''बुलबुल उड़कर दूसरे गुलाब के पौधे के पास जाती है और विनती करती है, लेकिन कोई फायदा नहीं होता।''

''वह अंतिम पौधे के पास पहुँचती है, और वही प्रश्न पूछती है।''

पौधा कहता है, ''क्या करें, मेरी शाखाओं में एक भी फूल नहीं है। यह पतझड़ का मौसम है।''

बुलबुल विनती करती है, ''मैं केवल एक गुलाब माँग रही हूँ।''

''गुलाब का पौधा कहता है, ''एक तरीका है। केवल एक ही तरीका, जो काफी कठिन भी है और तुम्हें वह बताना दर्दनाक हैं।'' बुलबुल जोर देकर उसे बताने के लिए कहती है।

पौधा कहता है, ''यदि तुम अपना दिल मेरे काँटों के पास रखकर गाओगी, तो एक अत्यंत सुंदर लाल गुलाब खिलेगा। लेकिन उसे देखने के लिए तुम नहीं रहोगी। तुम अपने दिल के घायल हो जाने से मर जाओगी।''

बुलबुल सोचती है, ''गुलाब के लिए मरना? क्या यह कुछ ज्यादा नहीं है? लेकिन प्यार जिंदगी से भी बड़ा है। अन्यथा, एक पक्षी का दिल एक मनुष्य के दिल की तुलना में महत्वहीन है।''

''वह ऐसा करने का संकल्प करती है और प्यार में डूबे युवक तक पहुँचकर उसे सांत्वना देती है कि उसे लाल गुलाब मिल जाएगा।''

''लड़का कुछ नहीं समझता। लेकिन बुलबुल अपने वादे की पक्की होती है वह गाती रहती है, जब तक कि उसका खून काँटों के माध्यम से बह कर फूल तक नहीं पहुँचता और फूल को चमकदार लाल नहीं बना देता। अपने अंतिम क्षणों में, बुलबुल का गीत धीमा होकर डूबने लगता हैं वह बेजान हो जाती है।''

''अगली सुबह लड़के को एक सुंदर लाल गुलाब मिलता है। खुशी से उछलते हुए वह उसे उठाता है और अपने सपनों की लड़की के पास दौड़ता है।

''क्या आप जानते हैं कि लड़की क्या करती है? वह उसका तिरस्कार करते हुए कहती है कि जब अन्य लोग उसे गहने और कपड़े दे रहे हैं तो वह एक योग्य उपहार नहीं है।''

''उसकी भावनाओं का अपमान करते हुए वह उसे बाहर निकाल देती है और युवक गुलाब को फेंक देता है। इस तरह बेवजह एक जीवन, एक आत्मा का बलिदान हुआ।''

''और लड़का, यह जानकर कि उसे अस्वीकार कर दिया गया है, गणित की ओर वापस चला जाता है।''

''शायद उसने सोचा होगा कि स्नातक होने के बाद उसके पास सांसारिक चीजें अर्जित करने और उन्हें लड़की को पेश करने का बेहतर मौका होगा।''

शेखरेत्तन की कहानी सुनकर हम मूक हो गए। यह स्पष्ट था कि उन्होंने वर्तमान मलयाली समाज के खिलाफ एक अप्रत्यक्ष तीर चलाने के लिए जो स्पष्ट उपयोगिता के बिना किसी भी चीज को महत्व नहीं देता है, ऑस्कर वाइल्ड का सहारा लिया था। ❐

राज्यपाल, राज भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

भाषा जब खत्म होती है

❐ नितिन गुप्त

सबसे पहले मरने लगती है लोकोक्तियाँ
मुहावरे अंतिम आहें भरते हैं

फिर उसके शब्दों से
विज्ञान छीनने की रची जाती है साजिश
उसके बाद छीना जाता है रोजगार

नई नस्ल की जीभ पर
रखी जाती नई भाषा
ताकि खत्म हो लगाव का आखिरी सिरा
उसके बोलने वालों को
घोषित किया जाता है गंवार

सच इतना आसान कहाँ होता है
एक भाषा के लिए खत्म होना

इतना सब कुछ अपने सीने पर ढोती है
एक भाषा मृत होने से पहले। ❐

दो कविताएँ

❐ अनुपमा तिवाड़ी

चिड़िया के पर

वे बड़े गर्व से भरे हैं
कि उन्होंने तुम्हें
पिंजरे में नहीं रखा
कि फुदकती रहो
बस, अपने आँगन में।
लेकिन,
चिड़िया के पंख होते हैं
वो फुदकना ही नहीं
उड़ना भी चाहती है।
इसलिए,
चिड़ियो!
तुम उड़ो
सारा आकाश तुम्हारा है।
चिड़िया उड़ती ही
सबसे सुंदर लगती है।

रोटी और जीवन

कितनी छोटे हैं
जाति और धर्म।
कितनी बड़ी है
भूख और मृत्यु।
तुम छोटी चीज के लिए लड़ो
मैं बड़ी के लिए।
भूख और मृत्यु
बनाम
रोटी और जीवन। ❐

ए-108, रामनगरिया, जे.डी.एम. स्कीम,
SKIT कॉलेज के पास, जगतपुरा,
जयपुर-302017 (राज.); मो. 7742191212